# ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
# जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
# डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
# पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

**बुलेटिन संख्या–११**
**दिनांक– बुधवार,१० फरवरी, २०२१**

## विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 20.2 एवं 10.9 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 88 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 62 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 3.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाष अवधि औसतन 7.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 18.1 एवं दोपहर में 22.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

## मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
## (11–15 फरवरी, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 11–15 फरवरी, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित की अवधि में तापमान में २–३ डिग्री सेल्सियस वृद्धि होने की सम्भावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 12 से 14 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 6 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।

## समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमान की अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान हल्दी, ओल की तैयार फसलों की खुदाई एवं राई–सरसों की तैयार फसलों की कटाई प्राथमिकता देकर करें तथा समय से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो गाभा की अवस्था में आ गयी हो उसमें सिंचाई कर 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें।
- अरहर की फसल जिसमें 50 प्रतिषत फूल आ गया हो उसमें फली छेदक कीट से बचाव के लिए प्रोफेनोफॉस 50 ई0 सी0 दवा 2.0 मी0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- बसन्तकालीन ईख एवं शकरकन्द की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। अक्टुवर–नवम्बर महीनों मे रोपी गई ईख की फसल में हल्की सिंचाई करे। जो किसान भाई बसन्तकालीन ईख लगाना चाहते हैं, खेत की तैयारी कर बुआई शुरु करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेष कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाष फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए जिन किसान भाईयों की खेत की तैयारी हो चुकी है बुआई शुरु कर सकते हैं तथा जिन किसानों का खेत तैयार नही है वैसे किसान भाई खेतों की तैयारी जल्दी करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई प्राथमिकता से करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं 12.5 किलोग्राम युरिया को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। दीमक कीट का प्रकोप फसल में दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर खड़ी फसलों में समान रूप से व्यवहार करें।
- समय से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो गाभा की अवस्था में आ गयी हो उसमें सिंचाई कर 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो 40 से 45 दिनों की हों गयी हो उसमें दूसरी सिंचाई करें।
- पपीता की खेती करने वाले किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि 12 से 17 फरवरी तक नर्सरी की तैयारी कर बीज की बुआई कर दें। अन्यथा देर होने की स्थिति में बढ़ते तापमान के कारण रोपनी के समय पौधे पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेष कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाष फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- ऐसे बाग जिसमें निकट भविष्य में फूल आनेवाले हो उसमें इमिडाक्लोप्रीड (17.8 SL) /0.5 मिली/लीटर एवं हेक्सा कॉनाजोल (हेककॉनाजोल) 1 मिलीलीटर/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से क्रमशः हापर एवं चूर्णिल आसिता के साथ साथ अन्य फफूंद जनित रोगों की उग्रता में कमी आती है।
- आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना को देखते हुए किसान अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में दीमक, मधुआ एवं दहिया कीटों तथा पौउड्री मिल्डेव रोग की निगरानी करे।
- केला की सुखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर खेत से बाहर करें जिससे रोग की उग्रता में कमी आयेगी। हल्की गुड़ाई करने के बाद प्रति केला 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें।

| | |
|---|---|
| आज का अधिकतम तापमानः 24.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.5 डिग्री कम | आज का न्यूनतम तापमानः 11.1 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.5 डिग्री अधिक |

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी